आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श

बी. एस. राठोड*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21438762

ABSTRACT

आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण वैचारिक धारा के रूप में उभरा है, जिसने स्त्री के अस्तित्व, अस्मिता, स्वतंत्रता और अधिकारों से जुड़े प्रश्नों को केंद्र में स्थापित किया है। यह शोध-पत्र स्त्री विमर्श की अवधारणा, उसके विकास, प्रमुख हिन्दी लेखिकाओं के योगदान तथा स्त्री जीवन की विविध समस्याओं के साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आधुनिक साहित्य स्त्री को केवल करुणा की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और आत्मनिर्णयी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

KEYWORDS: स्त्री विमर्श, आधुनिक साहित्य, नारी अस्मिता, लैंगिक असमानता, स्त्री सशक्तिकरण

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में घटित परिवर्तन साहित्य में परिलक्षित होते हैं। आधुनिक काल में स्त्री विमर्श साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में विकसित हुआ है। यह विमर्श स्त्री के जीवन से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों को उजागर करता है।

प्राचीन काल से स्त्री को द्वितीयक स्थान दिया गया, किंतु आधुनिक युग में शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रभाव से स्त्री चेतना का विकास हुआ। भीमराव अंबेडकर का यह कथन-"शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो"-स्त्री सशक्तिकरण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

स्त्री विमर्श (Feminism) का उद्देश्य समाज में स्त्री-पुरुष समानता की स्थापना करना है। यह विमर्श पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक भेदभाव और सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करता है।

* **डॉ. बी. एस. राठोड,** प्राचार्य, वी. डी. एस. महाविद्यालय, गदग.

महादेवी वर्मा ने कहा है- "स्त्री की स्वतंत्रता उसके व्यक्तित्व के विकास की पहली शर्त है।" स्त्री विमर्श केवल अधिकारों की मांग नहीं, बल्कि स्त्री की पहचान और गरिमा की पुनर्स्थापना का प्रयास है। महादेवी वर्मा को हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना की अग्रदूत माना जाता है। उनकी कृति "श्रृंखला की कड़ियाँ" में स्त्री की पराधीनता और स्वतंत्रता की आकांक्षा का गहन विश्लेषण मिलता है।

उनके अनुसार-"नारी जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना उसकी पराधीनता है।" मन्नू भंडारी के उपन्यास "आपका बंटी" में टूटते पारिवारिक संबंधों के बीच स्त्री की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसमें स्त्री की भावनात्मक पीड़ा और आत्मसम्मान का संघर्ष स्पष्ट होता है। कृष्णा सोबती का उपन्यास "मित्रो मरजानी" स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी कामनाओं को निर्भीक रूप से प्रस्तुत करता है। यह कृति सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती देती है। इस्मत चुगताई की कहानी "लिहाफ" स्त्री की यौनिकता और समाज की दोगली मानसिकता को उजागर करती है। यह स्त्री विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रचना है। उषा प्रियंवदा की कहानी "वापसी" में आधुनिक स्त्री के अकेलेपन और पारिवारिक संबंधों के बीच उसकी स्थिति का मार्मिक चित्रण मिलता है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास "आवां" में श्रमिक वर्ग की स्त्रियों के संघर्ष और शोषण को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। प्रभा खेतान की आत्मकथा "अन्या से अनन्या" स्त्री की आत्मखोज और सामाजिक बंधनों से मुक्ति की यात्रा का दस्तावेज है।

सुशीला जी स्वयं दलित होने के कारण अपनी कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा और नाटक के माध्यम से दलित नारी की पीड़ा, व्यथा, शोषण, अन्याय, अंधविश्वास आदि की दशा को दिशा देने की कोशिश की है। इसलिए वह दलित समाज की पथप्रदर्शिका बनकर सामने आती हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास "नीला आकाश" में लेखिका ने महाराष्ट्र के 'कान्हन' नामक गाँव का चित्रण किया है जो दलित समाज की स्थिति-गतियों की और दलितों में जागृति पैदा करके उन्हें एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करता है। 'टूटता अहम', 'स्वाति बूँद और खारे मोती' और 'संघर्ष' कविता संग्रह हैं। यह दलित स्त्री की पीड़ा, संघर्ष, पढ़ी-लिखी नारी की घुटन को प्रस्तुत करते हैं, और "सिलिया" और 'जरा समझो' कहानी संग्रह में लेखिका ने छुआछूत और दलित नारी की शिक्षा के महत्व को उजागर किया है। "शिकंजे का दर्द" लेखिका की आत्मकथा है। इसमें लेखिका का विद्रोह दिखाई देता है। उनका विद्रोह आत्मसम्मान को जगाता है। अपने जीवन के अपमान को दर्शाता है। शिक्षित बनकर, संगठित होकर, संघर्ष करने का मार्ग बताता है। उनका "नंगा सत्य" नाटक दलित समाज का जीता-जागता दस्तावेज माना जाता है।

रमणिका गुप्ता आधुनिक काल की प्रतिभा संपन्न महिला साहित्यकार हैं। उन्होंने नारी संघर्ष और आदिवासी विमर्श पर अपनी लेखनी चलाई है, और खासकर मजदूर एवं शोषित स्त्री के प्रति अधिक सहानुभूति प्रकट की है।

रमणिका गुप्ता ने अपने उपन्यास "सीता" और "मौसी" में नारी संघर्ष की स्थिति का चित्रण किया है। "मौसी" उपन्यास में नायिका 'मौसी' को आर्थिक संघर्ष से जूझना पड़ता है। इसके कारण उसे लड़कियों को बेचना, शराब बेचना पड़ता है, और वह अंत में हताश होकर भगवान बाबू की रखैल भी बन जाती है। रमणिका गुप्ता के दोनों उपन्यासों में नारी संघर्ष के साथ-साथ स्त्री मजदूरों का प्राबल्य दिखाई देता है, जिसके कारण उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। उपन्यास की नायिका अब अन्याय शोषण के खिलाफ़ बगावत करने में माहिर हो गई है। अन्याय-अत्याचार का डटकर सामना करती है।

कौशल्या बैसंत्री जी की आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में पढ़ी-लिखी दलित नारी का दुख, शोक तथा घुटन का चित्रण हुआ है। इस आत्मकथा में लेखिका ने पढ़ी-लिखी होने के कारण अपने जीवन के उतार-चढ़ाव, भोगे हुए सत्य, अपने जीवन की घुटन को बताया है। लेखिका की दृष्टि में स्त्री होना एक अभिशाप है। उनका कहना है कि आज भी अंतर्जातीय प्रेम विवाह के कारण उनका जीवन संघर्षमय है। असफल प्रेम विवाह, टूटता परिवार, जातिगत संस्कार, सवर्णों का शोषण आदि को इस आत्मकथा के द्वारा प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श ने स्त्री को एक नई पहचान प्रदान की है। अब वह केवल सहनशीलता और त्याग की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र, सशक्त और आत्मनिर्णयी व्यक्तित्व के रूप में उभर रही है। साहित्य ने स्त्री की आवाज को मंच प्रदान किया है और समाज को उसकी समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाया है। अतः कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श आधुनिक साहित्य की एक परिवर्तनकारी धारा है, जो समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

संदर्भ सूची:

1. महादेवी वर्मा – श्रृंखला की कड़ियाँ
2. मन्नू भंडारी – आपका बंटी
3. कृष्णा सोबती – मित्रो मरजानी
4. इस्मत चुगताई – लिहाफ
5. उषा प्रियंवदा – वापसी
6. चित्रा मुद्गल – आवां
7. प्रभा खेतान – अन्या से अनन्या
8. भीमराव अंबेडकर – भाषण एवं लेख
9. त्रिवेणी – चयनित उपन्यास
10. अनुपमा निरंजन – चयनित रचनाएँ
11. वैदेही – चयनित कहानियाँ